Impact Factor 2.147

ISSN 2349-638x

Reviewed International Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly Publish Journal

VOL-III ISSUE-VI June 2016

Address
•Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
•Tq. Latur, Dis. Latur 413512
•(+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
•aiirjpramod@gmail.com

Website
•www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

मोहन राकेश एक नाटककार

डॉ. ईश्वरप्रसाद रामप्रसादजी बिदादा
दयानंद वाणिज्य महाविद्यालय, लातूर

राकेशजी ने लगभग सभी विद्याओं पर लिखा है, किन्तु सबसे अधिक सफलता उन्हें नाटको में मिली है । उन्होंने इस बात का प्रयत्न किया है कि नाटक सीधे रंगमंच से जुडे रहे । इस विद्या में उन्होंने बहुत ज्यादा नहीं लिखा, लेकिन जितना भी लिखा है, उसमें आधुनिक संवेदना के स्वर खुलकर सामने आये है । नाटककार के रुप में राकेशजी निस्सन्देह प्रसादोत्तर युग के अग्रणी नाटककार है । यह कह सकते है, कि प्रसाद के बाद पहली बार हिन्दी को एक ऐसा नाटककार मिला, जिसने हिन्दी रंगमंच के लिए एक नया दर्शक पैदा किया था । नाट्य क्षेत्र में राकेशजी की अनुठी प्रतिभा के दर्शन होते है । मैं तो उनके नाट्य साहित्य को देखने के पश्चात् यही कहूँगा कि राकेशजी नाट्य जगत के लिए ही अवतरित हुए थे । नाटक रंगमंग के साथ उनका व्यक्तित्त्व उजागर हो हो गया हो ऐसा प्रतीत होता है । नाटक सृजन में उन्होंने एक नया शिल्प तथा एक नया मंच हिन्दी जगत को प्रदान किया । उन्होंने चार नाटकों की रचना की । 'आषाढ़ का एक दिन', 'लहरों के राजहंस', 'आधे-अधूरे' और 'पैरों तले की जमीन' । उनके नाटकों के संदर्भ में चर्चा करें तो एक गहरी संवेदना, अलौकिक पात्र जगत और आधुनिकता से मंडित एकदम नूतन शिल्प उनके इन नाटकों में दिखाई देता है, जो हिन्दी नाट्य साहित्य में एक नवीन अभिरुचि को ही जन्म नहीं देता वरन् लेखन के क्षेत्र में नए आयाम भी प्रस्तुत करता है । उन्होंने पहला नाटक 'आषाढ़ का एक दिन', महाकवि कालिदास को लेकर लिखा है और इस नाटक को लिखते समय उन्होंने जो प्रतिक्रिया व्यक्त की है वह दृश्यव्य है - 'नाटक विषय पर लिखना अपने आपमें एक कठिन कार्य है '। यहाँ राकेशजी का उद्देश्य कालिदास के माध्यम से एक ऐसे सर्जक का चित्र प्रस्तुत करना है, जिसके मन में लगातार द्वन्द चल रहा है । यहाँ पर महाकवि कालिदास की केवल कथा कहना नाटक का उद्देश्य नहीं है, बल्कि एक कवि के मन को व्याख्याति करना राकेशजी का उद्देश्य रहा है । यही कारण है कि यहाँ पर ऐतिहासिक पात्रों के साथ कल्पित पात्रों का राकेशजी ने सृजन किया है । कालिदास जैसे चरित्र को राकेशजी ने आज की पृष्ठभूमि में रखकर देखा है । राकेशजी की विशेषता यह है कि 'आषाढ़ का एक दिन' प्रथम नाट्य रचना होते हुए भी यह उनकी प्रौढ़ क्रति मानी जाती है । इसमें मल्लिका के कथन से नाटक का आरंभ होता है, वह कहती है - आषाढ का पहला दिन और ऐसी वर्षा माँ धाराधार वर्षा दूर-दूर तक की उपत्यकाएँ भीग गई - और मैं भी तो, देखो न माँ कैसी भीग गयी हूँ । राकेशजी का 'आषाढ़ का एक दिन' आधुनिक संदर्भ को व्यक्त करता है, उसमें काश्मीर की जनता का विद्रोह और कालिदास की असफलता चित्रित हुई है । कालिदास की प्रिया मल्लिका, कालिदास क चले जाने पर यातना में डूब जाती है । इस तरह नाटक के अंत में करुण यथार्थ प्रस्तुत किया गया है । राकेशजी ने सर्जनात्मक अनुभव से युक्त नाक देकर निःसंदेह हिन्दी रंगमंच और रंगकर्मियों को एक सम्माननीय भाव दिया है ।

'लहरो के राजहंस' राकेशजी का दूसरा नाटक है, जो १९६३ में लिखा गया था । इस नाटक के प्रथम संस्करण की भूमिका में राकेशजी ने इतिहास संबंधी अपने द्रष्टिकोण को स्पष्ट

करते हुए कहा है - इतिहास और साहित्य में अंतर होता है, साहित्य इतिहास के समय में बँधता नहीं, समय में इतिहास का विस्तार करता है, युग से युग को अलग करता नहीं, कई-कई युगों को एक साथ जोड़ देता है । इस कथन से स्पष्ट होता है कि समय अत्यधिक बलवान होता है । 'लहरों के राजहंस' की कथा राकेशजी ने अश्वघोष के 'सौदरनंद' काव्य से प्राप्त की है, जिसका उल्लेख उन्होंने नाटक की भूमिका में किया है । 'लहरों के राजहंस' की कथा में इतिहास और कल्पना का संयोजन है 'लहरों के राजहंस' की । इतना ही नहीं नाटक के प्रथम अंक में ही कामोत्सव का आयोजन है, जो उसके ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक पक्ष को स्पष्ट करता है । 'लहरों के राजहंस' में कथा बिलकुल संक्षिप्त है और उसमें नाटककार का उद्देश्य 'सुंदरी' के अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण करना है, जो बुद्धदेव को भी अपने ढंग से चुनौती देती है ।

राकेशजी की तीसरी नाट्य रचना है 'आधे-अधूरे'। इस नाटक को समकालीन जिंदगी का पहला सार्थक हिन्दी नाटक कहा जा सकता है । इस नाटक का फलक न तो बहुत विस्तृत है और न ही विशाल किन्तु इस नाटक की समस्याएँ आधुनिक सामाजिक जीवन से जुड़ी हुई है । यह नाटक मौजूदा जीवन की विडंबना के कुछ एक सधन बिन्दुओं को रेखांकित करता है । इस नाटक की अत्यंत महत्त्वपूर्ण विशेषता इसकी भाषा है, इसमें यह सामर्थ्य है, जो समकालीन जीवन के तनाव को पकड़ सके । इसके पात्रों की मनःस्थितियाँ यथार्थपरक तथा विश्वसनीय है । यह नाटक एक स्तर पर स्त्री-पुरुष के बीच के लगाव और तनाव का दस्ताऐवज है । इसमें महेन्द्रनाथ को बहुत निकट से जानने के बाद उसे वितृष्णा होने लगती है क्योंकि जीवन से सावित्री बहुत कटु हो गयी है । एक ओर घर को चलाने का असह्य बोझ तो दूसरी ओर जिंदगी में कुछ भी हासिल न कर पाने की तीखी कचोट है। इतना ही नहीं वह अपने बच्चों के बर्ताव से अत्यंत त्रस्त हुई है । सावित्री बची-खुची जिंदगी को ही एक पूरे, संपूर्ण पुरुष के साथ बिताने की आकांक्षा रखती है, पर यह उसकी आकांक्षा पूरी नहीं होती । 'पैरों तले की जमीन'की कथावस्तु आज के आधुनिक जीवन की विडम्बना से युक्त है । इसमें यथार्थता है । प्रत्येक वर्ग, समाज का व्यक्ति इसमें अपनी कमजोरियों और आज अर्थ की महता में 'कुछ बनने' की अंधी दौड में उसके सामाजिक, पारिवारिक जीवन के मूल्यों में एक टूटन, बिखराव आ जाता है ।

व्यक्ति-व्यक्ति के बीच का संबंध टूटने की कगार पर आ पहुँचा है । इसमें लोग दोहरी जिंदगी जीते है जो आज के समाज से हमें रुबरु कराता है ।

राकेशजी ने मानव जीवन के अनादिकाल से चले आते प्रश्नों को निरुपित किया है । मानवीय संबंधो के प्रति ऐसी कलात्मक, विवेचनात्मक और सौन्दर्यबोधक अभिव्यक्ति राकेशजी के विराट व्यक्तित्त्व की मौलिकता है ।

कथा, तत्त्व, चरित्र सृष्टि, मंचीयता आदि को उन्होंने पूर्ण स्वाभाविकता और व्यवहारिकता प्रदान की है । उनकी परिकल्पनाएँ यथार्थ से प्रेरित, समकालीन जीवन की समस्यामूलक, अस्तित्त्ववादी चेतना में भूली हुई मानव की प्रतिमूर्तियाँ है । अपने इन नाटकों में उन्होंने एक ऐसे मानव की रचना की है जो प्रारंभ से इस सृष्टि के साथ जूझ रहा है और जूझता रहेगा । समाज को

इस वास्तविक बोध से परिधित करना उनकी सभी नाट्य कृतियों की आकांक्षा रही ।

१) आषाढ का एक दिन - सन १९५८ प्रथम संस्करण
२) लहरों के राजहंस - सन १९६३ प्रथम संस्करण
३) आधे अधुरे - सन १९६९ प्रथम संस्करण
४) पैर तले की जमीन - सन १९८२ तृतीय संस्करण

संदर्भ ग्रंथसुची

१) तिलकराज शर्मा - अपने नाटकों के दायरे में मोहन राकेश
२) विश्वप्रकाश दीक्षित - नाटककार मोहन राकेश
३) अनिता राकेश - चन्द सतरे और
४) प्रतिभा अग्रवाल -मोहन राकेश
५)मोहन राकेश - आषाढ का एक दिन

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com